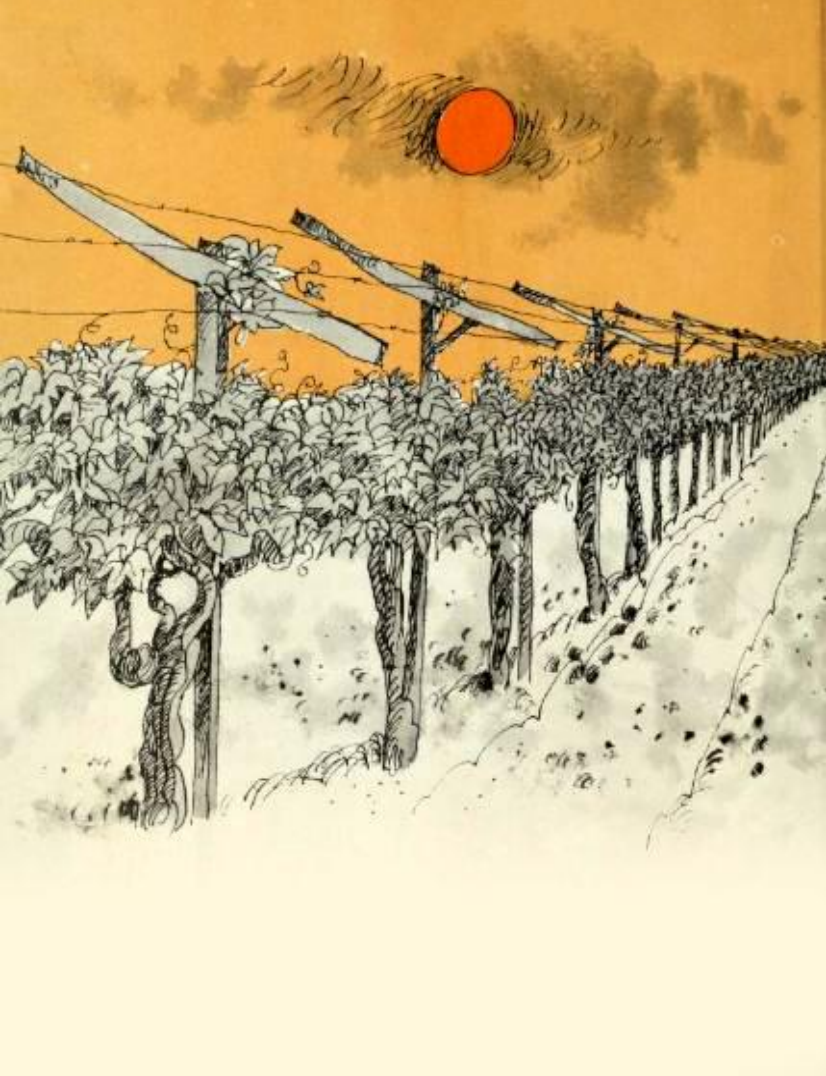


# सीज़र शावेज़

रुथ, चित्र : अर्ल, हिंदी : विदूषक





# सीज़र शावेज़



आठवीं कक्षा पास करने तक **सीज़र शावेज़** कैलिफ़ोर्निया के 36 स्कूलों में पढ़ा. उसके माता-पिता प्रवासी (माइग्रेंट) मेक्सिकन-अमेरिकन मजदूर थे. वो फसलों के हिसाब से कैलिफ़ोर्निया के खेतों में घूमते और काम करते थे. मेहनत करते-करते उनकी पीठ दुःख जाती थी. पर उसके बावजूद वे अपने परिवार को खाना और कपड़े मुहैया नहीं करवा पाते थे.

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि युवा शावेज़ अपने साथी मजदूरों के हालात सुधारना चाहता था. उसने अपने साथियों को समझाया कि सामूहिक प्रयास से ही वे अपनी गरीबी और दुर्दशा की हालत को सुधार सकते थे. अंत में जब अंगूर तोड़ने वाले मजदूर बेहतर वेतन के लिए आन्दोलन करने को तैयार हुए तब सीज़र शावेज़ ने उनका नेतृत्व किया. उसने ट्रक वालों, दुकानदारों और अन्य लोगों को भी इस आन्दोलन में शामिल किया. आज सीज़र शावेज़ का नाम और काम, पूरे अमरीका में मशहूर है.

**रुच्य** को सामाजिक समस्याओं की बेहद गहरी समझ है, और प्रवासी मजदूरों के लिए उनके दिल में करुणा है. इस कहानी से हमें पता चलता है कि अमरीका जैसे समृद्ध देश भी कई क्षेत्रों में बेहद गरीब है.



यूमा, एरिज़ोना का इलाका एकदम सूखे रेगिस्तान जैसा है. वहां दिन में बेहद चिलचिलाती गर्मी पड़ती है. वहां पर कैक्टस के ऊंचे पेड़ - प्रिकली पीयर और जोशुआ के पेड़ रेतीली ज़मीन पर शांत लोगों जैसे खड़े रहते हैं.



यह वो फार्म है जहाँ **सीज़र शावेज़** कभी  
अपने माता-पिता और पांच भाई, बहनों के  
साथ रहता था.

दस साल की उम्र तक उसने अपने नंगे तलवों से तपती गर्म ज़मीन को महसूस किया. गर्म धूल के थपेड़े उनके शरीर की चमड़ी पर काँटों जैसे चुभते थे.



सीज़र के दादाजी मेक्सिको से अमरीका आए थे.  
मेक्सिको के अन्य प्रवासी मजदूरों के साथ वे भी एरिज़ोना  
की मुक्त ज़मीन पर आकर बस गए थे.

दादाजी ने कैक्टस के पेड़ों को काटकर वहां बड़ी मुश्किल  
से रेतीली ज़मीन पर जुताई और सिंचाई करके अपनी छोटी  
खेती तैयार की. वहां उन्होंने खरबूजे, मक्का और बीन्स  
उगाए. अपने खेत पर उन्होंने बहुत मेहनत की.







बाद में सीज़र के माता-पिता ने भी, उसी खेत पर सुबह तड़के उठकर रात तक काम किया. घर के बड़े बच्चे भी काम में उनकी मदद करते थे. शुरू में सीज़र और छोटे बच्चे घर पर ही रहते थे. पर कुछ बड़े होने के बाद सीज़र भी फार्म पर मदद करने लगा. वो पानी ढोता और खरपत बीनता था.

सीज़र का परिवार अपने खाने के लिए फसलें उगाता था. अगर कुछ सब्जियां बच जाती थीं तो वे उन्हें यूमा के बाज़ार में जाकर बेंच देते थे. उन पैसों से वे कुछ कपड़े खरीदते थे. पर उसके बावजूद कुछ बच्चों को सर्दियों में फिर भी नंगे पैरों घूमना पड़ता था. चर्च जाने के समय या सन्डे वाले दिन किसी के भी पास अच्छे कपड़े नहीं होते थे.

सीज़र के परिवार में सभी की चमड़ी गहरे रंग की थी और उनके बाल काले थे. वे सिर्फ स्पेनिश ही जानते थे. वैसे वे अमरीका में पैदा हुए थे, पर वे मेक्सिकन-अमेरिकन थे.



जब सीज़र छोटा था तो वो अक्सर अपने माता-पिता को यह कहते हुए सुनता था कि अमरीका एक बहुत ही कठिन दौर से गुज़र रहा था. यूमा में कुछ लोगों के पास तो सब्जी खरीदने तक के लिए पैसे नहीं थे.

1937 में, जब सीज़र दस साल का था तब उसके माता-पिता ने उससे कहा कि अब वे लोग अपने फार्म पर नहीं रह पाएंगे. उन्होंने समझाया कि अब एरिज़ोना राज्य के सभी किसानों को एक नया लगान, या टैक्स देना होगा. अगर किसान टैक्स नहीं भर पाए तो उन्हें अपने फार्म, राज्य सरकार को सौंपने होंगे.

उस साल शावेज़ परिवार ने कुछ ख़ास नहीं कमाया था और उनके पास टैक्स चुकाने के लिए पैसे नहीं थे. उनके सभी पड़ोसियों की भी वही हालत थी. फिर वे पादरी के पास सलाह लेने गए. उन्हें लगा कि पादरी उनकी कुछ मदद कर पाएंगे, क्योंकि वो अंग्रेजी बोल सकते थे जबकि किसान अंग्रेजी नहीं जानते थे.





पादरी अपने लोगों की सहायता करना चाहते थे।  
पर पादरी ने भी कहा कि किसानों को टैक्स भरना ही पड़ेगा,  
नहीं तो उन्हें अपनी ज़मीन देनी होगी। पादरी, लोगों को टैक्स  
चुकाने के लिए पैसे देना चाहते थे, पर वे खुद गरीब थे।



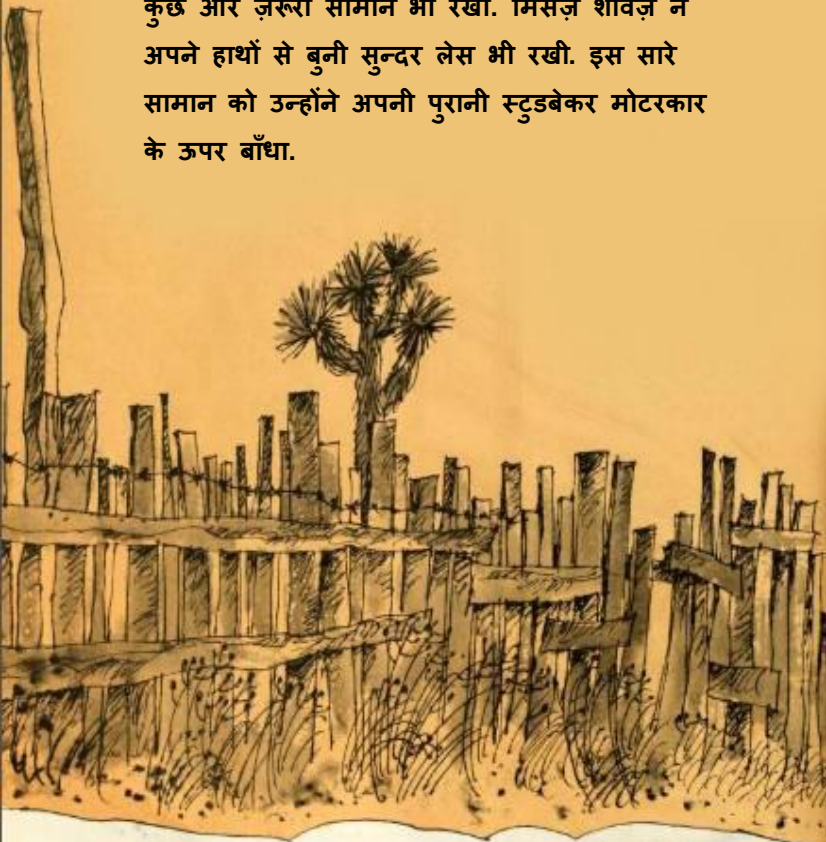
कुछ समय के लिए लोग बहुत परेशान और डरे थे.  
वो क्या करें? उन्हें कुछ समझ में नहीं आया.

फिर मजदूर ठेकेदारों ने यूमा के चक्कर लगाना शुरू किए. वो कैलिफ़ोर्निया के बड़े फार्म्स के लिए मजदूरों की तलाश में आए थे. उन्होंने गरीब किसानों को समझाया कि वो कैलिफ़ोर्निया के फार्म्स पर रुई, फल और सब्जियां तोड़ने का काम करके काफी कमा सकते थे.

सीज़र के माता-पिता ने इस संभावना के बारे में आपस में चर्चा की. उन्हें पता था कि अब यूमा में उनके लिए कोई काम नहीं बचा था. इसलिए उन्होंने कैलिफ़ोर्निया जाने का निर्णय लिया.



फिर गर्मियों में एक दिन उन्होंने अपना बोरिया-बिस्तर बंधा, बर्तन और बाल्टियाँ रखीं और साथ में कुछ और ज़रूरी सामान भी रखा. मिसेज़ शावेज़ ने अपने हाथों से बुनी सुन्दर लेस भी रखी. इस सारे सामान को उन्होंने अपनी पुरानी स्टुडबेकर मोटरकार के ऊपर बाँधा.





उसके बाद माता-पिता और छह बच्चे गाड़ी में बैठे और पश्चिम की ओर कोलोराडो नदी के पुल की ओर चले. पुल उनके घर से कुछ ही मील दूर था. उन्हें पता था कि पुल पार करने के बाद वे कैलिफ़ोर्निया की इम्पीरियल वैली में प्रवेश करेंगे.

उनके आगे-पीछे भी उनकी जैसी पुरानी गाड़ियाँ ही थीं, जो सामान और बच्चों से लदी थीं. सभी लोग उस नए राज्य की ओर जा रहे थे - एक बेहतर ज़िन्दगी जीने के उम्मीद में.



शावेज़ परिवार अपने फार्म को छोड़ने पर जहाँ एक ओर दुखी था वहाँ दूसरी तरफ एक नई ज़िन्दगी की आशा से खुश भी था. सीज़र के माता-पिता को उम्मीद थी कि वो वहाँ काफी धन कमाएंगे और तब उनके बच्चों को फार्म कर काम नहीं करना पड़ेगा. तब उनके बच्चे स्कूल जा सकेंगे और वे अंग्रेजी लिखना-पढ़ना सीखेंगे.

सीज़र ने मोटरकार में ज्यादा जगह नहीं घेरी. वो बहुत छोटा और पतला था.



सीज़र को पता था कि वो मेहनत से काम कर सकता था और पैसे कमा सकता था. वो शायद खुद के लिए जूते और एक नई शर्ट खरीद सकता था. उसकी पुरानी शर्ट अब पूरी तरह फट चुकी थी. उसके भाई रिचर्ड को भी जूतों की सख्त ज़रूरत थी. हो सकता था कि वो दोनों इकट्ठे काम करें.

अंत में वे उस बड़े फार्म पर पहुंचे जिसका पता ठेकेदार ने बताया था. उन्होंने वहां पर रहने के लिए घर ढूंढे पर वहां उन्हें सिर्फ एक-कमरे की झोपड़ियाँ ही दिखाई दीं – जो सभी टीन की चादरों की बनी थीं. शायद यह लोगों के रहने के लिए नहीं बनीं थीं, उन्होंने सोचा.

फिर वे एक झोपड़ी के अन्दर गए. अन्दर भट्टी जैसी तपन थी. अन्दर बाथरूम या पानी का कोई इंतजाम नहीं था. खाना पकाने के लिए सिर्फ एक गैस का स्टोव था.

थके-मांदे और परेशान वे कार में वापिस गए और सोचने लगे कि वे क्या करें. पर तभी दूसरे परिवार आए और वे अपना सामान उतारकर झोपड़ियों में रखने लगे.





अंत में मिस्टर शावेज़ ने मोटरकार से अपना सामान उतारा। मिसेज़ शावेज़ ने बर्तन-भांडे एक कमरे में रखे। सीज़र एक बाल्टी लेकर आया। वो मैदान में लगे नल में से पानी भरकर लाया और उसने उसे अपनी माँ को दिया।

जब सूरज ढला तब परिवार ने मिलकर ठंडा खाना किया। फिर उन्होंने गरम झोपड़ी के फर्श पर अपने बिस्तर बिछाए। फिर पुराने घर की याद संजोए और डरी हुई हालत में उन्होंने सोने की कोशिश की।

प्रवासी मजदूरों के साथ सीज़र की ज़िन्दगी की यह शुरुआत थीं। समय बीतने के साथ-साथ प्रवासी मजदूरों के हालात अच्छे होने के बजाए और बदतर हुए। ज़्यादातर मजदूरों को “झुके मजदूर” के नाम से बुलाया जाता था, क्योंकि पूरे दिन उनकी पीठ झुकी रहती थी। रात तक वे एकदम थक जाते थे और उनकी पीठ दुखती थी।

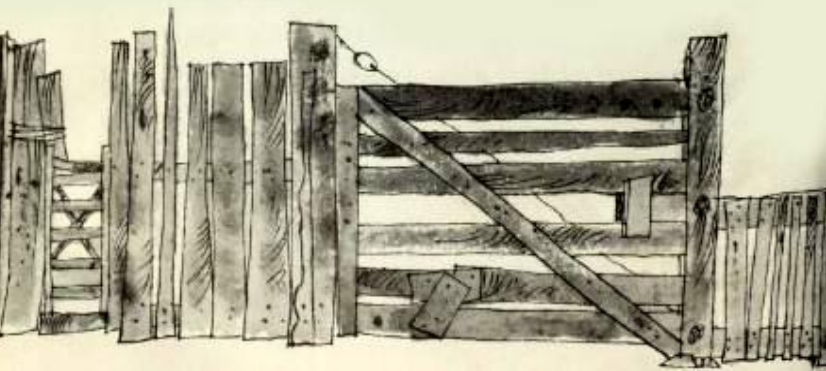


वो किसी भी फार्म पर वहां की फसल - सब्जी, फल या रुई पकने तक रुकते थे . अंत में उन्हें वादे से कहीं कम तनख्वाह मिलती थी. पर क्योंकि वे अंग्रेजी नहीं बोल सकते थे इसलिए वे किसी से कोई शिकायत भी नहीं कर सकते थे.

उन्हें जो कुछ भी वेतन मिलता, वे उसे लेकर फिर ठेकेदार द्वारा बताए दूसरे फार्म पर चले जाते. इस तरह उन्होंने कैलिफ़ोर्निया के मध्य से उत्तर की ओर पलायन किया. वे उस फ़्राम पर जाते जहाँ उन्हें फसल काटने का काम मिलता.

कभी-कभी फसल की उपज अच्छी नहीं होती. तब मजदूरों को पेट भरने लायक पैसे भी नहीं मिलते. तब वे अपनी कार के लिए पेट्रोल तक नहीं खरीद पाते. कभी-कभी सोने के लिए झोपड़ियाँ भी नहीं होती थीं. तब मजदूर अपनी कारों में या तम्बुओं में ही सोते थे.

एक बारिश भरी पूरी सर्दी में, सीज़र का परिवार एक पुल के नीचे रहा. एक बार फसल की कटाई के बाद उन्हें इतने कम पैसे मिले कि वो अपनी कार में पेट्रोल तक नहीं भरवा पाए. उन्होंने एरिज़ोना में अपने रिश्तेदारों से मदद मांगी. जब बाकी मजदूर कैंप छोड़कर चले गए तो फार्म के मालिक ने वहां की बिजली काट दी. उसके बाद भी वो डरे और भूखे उस झोपड़ी में कई दिनों तक रहते रहे. अंत में उन्हें रिश्तेदारों द्वारा भेजे पैसे मिले. तब वो लोस-अन्जेलिस जा पाए.





वहां बीच में मिसेज़ शावेज़ ने अपने पति से कार रोकने को कहा. फिर उन्होंने वो सुन्दर लेस निकाली जो उन्होंने यूमा के फार्म पर बुनी थी. मिसेज़ शावेज़ ने सड़क पर राहगीरों को वो लेस बेंची. उससे मिले पैसों से उन्होंने कुछ खाना खरीदा और अगले फार्म तक पहुँचने के लिए कार में पेट्रोल भरवाया.

जाड़ों में मजदूरों को बहुत कम काम ही मिलता था. उन महीनों में मिस्टर और मिसेज़ शावेज़ एक ही जगह पर टिकने की कोशिश करते थे, जिससे उनके बच्चे वहां स्कूल जा पायें. वो खुद और बच्चों के खाने के लिए जो भी छोटा-मोटा काम मिलता, वो करते रहते थे. पर वो एक जगह कुछ हफ्ते या महीने ही रह पाते थे. फिर काम की तलाश में उन्हें कहीं जाने को मजबूर होना पड़ता था.

आठवीं कक्षा पास करने तक सीज़र कोई तीन दर्जन स्कूलों में पढ़ा था. वो अपनी डेस्क पर बैठकर अंग्रेजी में लोगों को बात करते हुए सुनता था. इस तरह उसने कुछ अंग्रेजी भी सीखी. स्कूल के टीचर स्पेनिश बोलने वाले प्रवासी मजदूरों के बच्चों की समस्याओं पर बहुत कम ध्यान देते थे. उन्हें पता था कि चिथड़े पहने वे बच्चे जल्द ही वहां से चले जायेंगे और उनके स्थान पर वैसे ही अन्य बच्चे आ जायेंगे.





जब सीज़र को किसी प्रश्न का उत्तर पता होता था तो वो हाथ उठाकर उसका उत्तर देना चाहता था. पर उसे बहुत शर्म आती थी. उसे लगता था कि बाकी बच्चे उस पर हँसेंगे.

स्कूल खत्म होने के बाद सीज़र और रिचर्ड नहर में मछलियाँ पकड़ते थे. यह नहर, नदी से खेतों में पानी लाती थी. वो हरी सरसों का साग भी बीनते थे जिससे माँ रात को उसका खाना बना सके. वे हमेशा भूखे रहते थे.





वो सड़कों के किनारों से पुरानी सिगरेट की पैकेट और चूसने वाली च्युइंग-गम की एल्युमीनियम की पन्नी इकट्ठी करते थे. इस पन्नी को सपाट करके वे उसकी एक गेंद बनाते थे. जब गेंद आठ-किलो भार की हुई तब उन्होंने उसे कुछ डॉलर में बेंचकर अपने लिए जूते और दो टी-शर्ट खरीदीं. उनके लिए वो एक बड़ी खुशी का दिन था. सप्ताह के अंत में और छुट्टियों में वे अपने माता-पिता के साथ खेतों में काम करते थे.

कैलिफ़ोर्निया की घाटियों में हल्के रंग की चमड़ी वाले लोग जो मेक्सिकन नहीं थे उन्हें “एंग्लो” बुलाया जाता था. सीज़र, खेतों में एंग्लो मजदूरों से अंग्रेजी में बातचीत करता था. उनसे उसने बाहरी दुनिया, अलग-अलग फार्म्स और उनके मालिकों के बारे में कई नई बातें सीखीं. उसने उन फार्म्स के बारे में भी जानकारी इकट्ठी की जिनके मालिक ईमानदार थे और ज्यादा मजदूरी देते थे. उसे उन फार्म्स के बारे में भी पता चला जहाँ मजदूरों के रहने के लिए झोपड़ियाँ बिल्कुल टूटी-फूटी थीं.

सीज़र ने यह सब बातें अपने माता-पिता को बताईं. उसने अन्य मेक्सिकन-अमेरिकन मजदूर परिवारों, और मेक्सिको से आए नए परिवारों को भी इसके बारे में बताया. वो नहीं चाहता था कि अन्य गरीब लोग भी, उसके परिवार जैसे ही कष्ट भोगें.

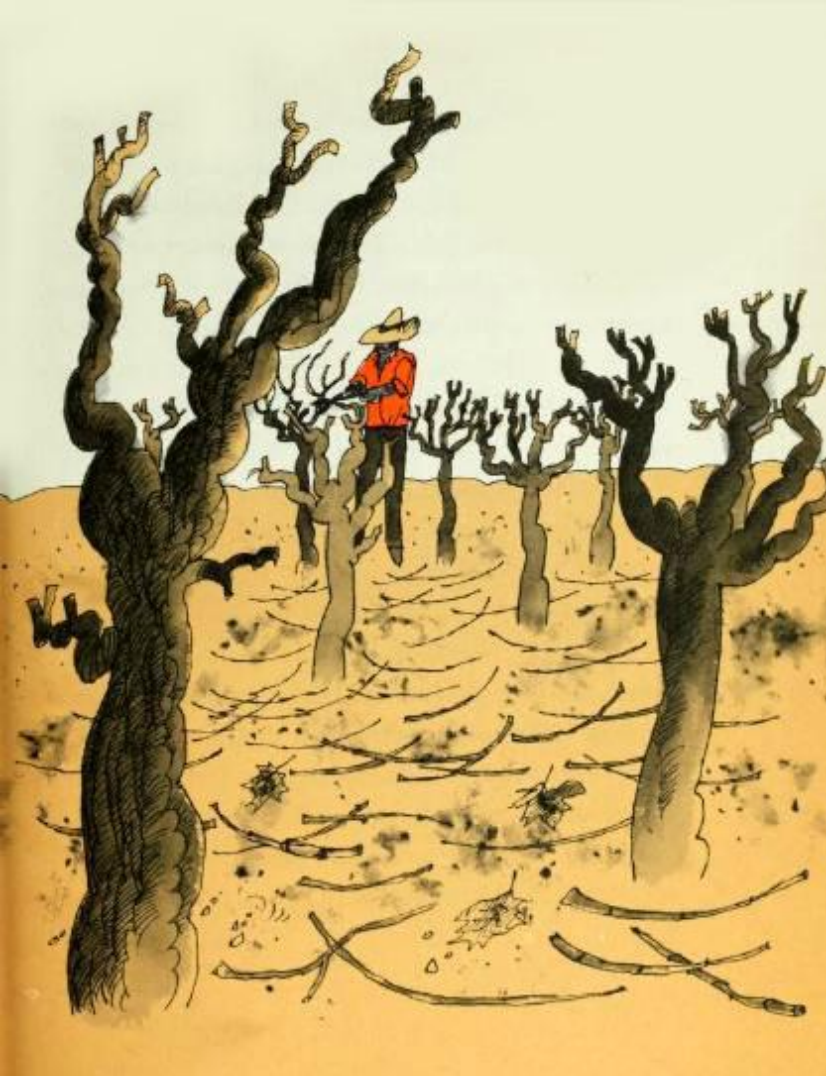
अंत में शावेज़ परिवार इधर-उधर भटकते-भटकते परेशान हो गया. अंत में वो सैन-होसे, कैलिफ़ोर्निया में, एक टूटी-फूटी झोपड़ी में स्थाई रूप से जाकर बस गए. वहां आसपास कुछ बड़े भी फार्म थे, जहाँ उन्हें अक्सर मजदूरी मिल जाती थी. जब सीज़र कुछ बड़ा हुआ तो वो अपने परिवार को छोड़कर चला गया और खुद एक फार्म पर नौकरी करने लगा.

सीज़र को अंगूर के फार्म्स पर काम करना अच्छा लगता था. वसंत के समय वो अंगूर के बेलों की लम्बी कतारों के बीच चलता था. उसे नई पत्तियों को खिलते हुए देखकर बहुत अच्छा लगता था. वो गर्मियों की धूप में अंगूरों को बढ़ते और उन्हें पकते हुए देखता था.

कुछ मायनों में वो एक बहुत दयनीय और कठिन काम था. बेलों के नीचे जहाँ अंगूर के गुच्छे लटकते वहाँ पर काले कीड़ों का झुण्ड उसके चेहरे और हाथों पर मंडराता. वहाँ की हवा में सांस लेना भी दूभर होता. लम्बे घंटों तक झुककर काम करने से उसकी पीठ दुखती थी.

पर अंगूर के खेतों में मजदूरों को पूरे साल कुछ-न-कुछ काम मिलता था. उन्हें एक फार्म से दूसरे फार्म पर जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी. सीज़र अन्य मजदूरों के साथ एक बैरक में रहता था और उनके साथ ही खाना खाता था. धीरे-धीरे वो अंगूरों की बेलों को काटने-छांटने और अंगूरों को तोड़ने में बहुत कुशल हो गया. जो काम सीज़र करता, वो किसी नौसिखिये के लिए करना बहुत मुश्किल था. इसलिए सीज़र को अपने काम पर गर्व था.

पर सीज़र अपने बचपन की गरीबी को कभी नहीं भूला था. बहुत से मजदूरों के बड़े परिवार अपने बच्चों के साथ अभी भी गन्दी और टूटी-फूटी झोपड़ियों में रहते थे.



सीज़र ने अन्य मजदूरों से बातचीत की. वो चाहता था कि वे लोग अपने मालिकों से बेहतर घरों और ज्यादा वेतन की मांग करें. पर ज्यादातर मजदूरों को लगता था कि अगर वो ऐसा करेंगे तो फिर उन्हें अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा. फिर वे कैसे अपने परिवार को पालेंगे?

उसी समय डेलानो, कैलिफ़ोर्निया में सीज़र की मुलाक़ात एक लड़की हेलेन फबेला से हुई. हेलेन को विश्वास था कि सीज़र, जो कुछ कर रहा था वो मजदूरों के हित में था. सीज़र को हेलेन से प्रेम हुआ और वो उससे शादी करना चाहता था.

पर तभी द्वितीय महायुद्ध शुरू हुआ और सीज़र नौ-सेना में भर्ती हो गया. नौ-सेना में, उसे अपने देश की सेवा करने का फ़ख़ था.

एक दिन छुट्टी में वो हेलेन से मिलने डेलानो आया. वो हेलेन के साथ सिनेमा देखने गया. बैठने के बाद एक चौकीदार आया और उसने कहा कि जहाँ सीज़र बैठा था वो सीटें “एंग्लो” लोगों के लिए आरक्षित थीं. चौकीदार ने सीज़र से उस सीट पर जाने को कहा जहाँ मेक्सिकन-अमेरिकंस बैठ सकते थे. सीज़र बिल्कुल हिंसक नहीं था. पर इस बर्ताव से उसे बेहद गुस्सा आया. सीज़र ने उसका विरोध किया. उसने सीट बदलने से इंकार किया. वो नौ-सेना में काम करता था, वो एक अमेरिकन था.

अंत में सीज़र और हेलेन से सिनेमाघर छोड़ने को कहा गया.

सीज़र, हेलेन के पीछे-पीछे चला. तब उसने एक दृढ़ निश्चय किया. युद्ध समाप्त होने के बाद वो दिन-रात मेहनत करेगा और अपने लोगों को आदर और इज्ज़त दिलवाने के लिए काम करेगा.

युद्ध खत्म होने के बाद सीज़र ने हेलेन से शादी की. फिर उसने कुछ समय सैन-होसे के पास एक फार्म पर खुबानी तोड़ने का काम किया. उसे एक घंटे काम के लिए सिर्फ 65-सेंट ही मिलते थे.



सीज़र ने अपने साथी मजदूरों को, ज्यादा वेतन की मांग के लिए संगठित किया. पर ज़्यादातर फार्म मजदूरों को, अभी भी अपने मालिकों से डर लगता था. जो मेक्सिकन अभी अमरीकी नागरिक नहीं बने थे उन्हें मेक्सिको वापिस भेजे जाने का भी डर लगा रहता था. पर मेक्सिको में ज़िन्दगी, कैलिफ़ोर्निया से कहीं बदतर थी.

फिर सीज़र ने मेक्सिकन मजदूरों के लिए कक्षाएं आयोजित कीं जिससे वे अंग्रेजी लिखना-पढ़ना सीखें. वो चाहता था कि वे अंग्रेजी की परीक्षा पास करें जो अमरीकी नागरिक बनने के लिए अनिवार्य थी. सीज़र को लगा कि अंग्रेजी सीखने से मजदूरों का डर कम होगा.

एक दिन एक एंग्लो - फ्रेड रोस, सैन-होसे आया. उसने सीज़र के काम के बारे में सुना था और वो सीज़र से मिलकर बातचीत करना चाहता था. पर सीज़र को एंग्लो लोगों ने ठगा था और उसके साथ दुर्व्यवहार किया था. इसलिए एक लम्बे समय तक सीज़र, फ्रेड रोस से नहीं मिला.

पर अंत में जब सीज़र, फ्रेड रोस को मिला तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ. उसने पाया कि फ्रेड मजदूरों के मदद करना चाहता था. फ्रेड ने उन विषयों पर चर्चा की जिसमें सीज़र का विश्वास था. फ्रेड ने बताया कि वो *कम्युनिटी सर्विस आर्गनाइजेशन* में एक संगठनकर्ता था.

सीज़र उससे बहुत उत्तेजित हुआ. फ्रेड रोस ने सीज़र से *कम्युनिटी सर्विस आर्गनाइजेशन* के लिए काम करने को कहा. सीज़र उसके लिए तुरंत तैयार हुआ.



सीज़र, दिन में खुबानी तोड़ने का काम करता था. शाम के समय वो उन मेक्सिकन-अमेरिकंस के साथ मीटिंग करता था जो अमरीकी नागरिक बन गए थे. वो उनसे पंजीयन करने की अपील करता था जिससे वे अन्य अमरीकी नागरिकों जैसे अपना वोट दे सकें. इस तरह दो महीनों में सीज़र ने चार हज़ार से ज्यादा मजदूरों का पंजीयन कराया.



सीज़र क्या कर रहा था? यह जल्द ही फार्म मजदूरों को समझ में आया. मालिक को डर था कि सीज़र कुछ उत्पात मचाएगा, इसलिए उसने सीज़र को नौकरी से निकाल दिया.

उसके बाद सीज़र ने फुल-टाइम *कम्युनिटी सर्विस आर्गनाइजेशन* के साथ काम किया. अब महीने में 325-डॉलर कमाता था. इतने पैसे उसने अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं कमाए थे. उसे अपने काम में बेहद रुचि थी.

सीज़र का एक काम था मीटिंग आयोजित करना. उसे यह करते हुए हमेशा डर लगा रहता था, क्योंकि मीटिंग की अगुवाई कैसे की जाए यह उसे पता नहीं था. इसलिए वो हर क्षण पढ़ता रहता था. वो अन्य वक्ताओं की बातों को बड़े ध्यान से सुनता था.

धीरे-धीरे मजदूरों ने उसे स्वीकार किया और वे उसके बातें सुनने लगे. मजदूर, सीज़र को चाहते थे क्योंकि वो उनकी समस्याओं को ध्यान से सुनता और समझता था.

धीरे-धीरे करके, सीज़र ने लोगों से संगठन में शामिल होने के लिए राज़ी किया. यह एक बेहद मुश्किल काम था. मजदूरों को हमेशा डर लगा रहता था कि आन्दोलन करने से कहीं उन्हें अपनी नौकरी से हाथ न धोना पड़े. मेक्सिकन मजदूरों को अंग्रेजी पढ़ने के लिए संगठित करना भी बहुत मुश्किल काम था. मजदूर कक्षाओं में आने का वादा करते पर फिर घर पर ही पड़े रहते. कभी-कभी सीज़र को कठोर तरीके भी अपनाने पड़ते थे और वो उन्हें "कायर" बुलाता था.

धीरे-धीरे सीज़र इस सबसे परेशान हो गया. मार्च 1962 में उसने *कम्युनिटी सर्विस आर्गनाइजेशन* छोड़ दी. सीज़र और हेलेन के अब अपने बच्चे थे. फिर वे डेलानो वापिस आए और वहां उन्होंने एक छोटा घर किराये पर लिया. घर शहर के पश्चिमी किनारे पर था जहाँ अन्य मेक्सिकन-अमेरिकंस रहते थे. एंग्लो लोग शहर के पूर्वी इलाके में रहते थे.



सीज़र और हेलेन ने 1200 डॉलर बचाए थे. उससे उन्होंने डेलानो के पास सैन जोअकुइन वैली के फार्म मजदूरों को संगठित करने की सोची. अपने परिवार की आजीविका चलाने के लिए हेलेन खेतों में काम करने गई. कभी-कभी सीज़र ने गड़ढे खोदने का काम भी किया.

उन्होंने अपने नए संगठन का नाम रखा *नेशनल फार्म वर्कर्स एसोसिएशन*(NFWA).



छह महीनों तक उन्होंने अलग-अलग प्रवासी मजदूरों के कैम्पस का दौरा किया. उन्हें हरेक कैम्प में कुछ उत्साही मजदूर मिले जो NFWA में शामिल हुए.

जब मजदूरों की संख्या 300 पहुंची तब सीज़र ने उनकी एक मीटिंग बुलाई. सीज़र और उसके चचेरे भाई मनुएल ने एक झंडा डिजाइन किया. झंडा लाल रंग का था और उसके बीच के सफ़ेद गोले में एक काले रंग की चील थी. पहली बैठक में सीज़र ने झंडे को तमाम मजदूरों को दिखाया. सब मजदूरों को झंडा पसंद आया.

फिर सीज़र ने कहा कि अगर हरेक परिवार कुछ चंदा देगा तभी NFWA उनकी कुछ मदद कर पाएगा. तब NFWA दवा की दुकानें, किराने की दुकानें और पेट्रोल स्टेशन शुरू करेगा जहाँ से लोग सस्ते में चीज़ें खरीद पाएंगे. जिन लोगों को अंग्रेजी नहीं आने के कारण मालिकों ने ठगा था उनकी लड़ाई के लिए वो वकील लगायेंगे. ज़रूरत के समय संगठन, अपने सदस्यों को पैसे भी उधार देगा.

जब तीन सौ सदस्यों ने सीज़र की योजना सुनी तो उन्होंने खुशी से तालियाँ बजाईं. उस बैठक के बाद बहुत से अन्य लोग भी NFWA के मेम्बर बने.

सीज़र जो कुछ वादे किए थे अगले तीन सालों में उसने उनपर अमल किया. साथ-साथ वो अन्य महत्वपूर्ण योजनायें भी बनाता रहा.

उसे पता था कि दुकानों में और कारखानों में काम करने वाले मजदूरों की सुरक्षा के लिए पक्के कानून थे. उन्हें ठीक वेतन मिलता था और उनका काम करने का माहौल भी अच्छा और सुरक्षित था.

पर फार्म्स पर काम करने वाले मजदूरों के लिए ऐसे कोई कानून नहीं थे. वहां मालिक, मजदूरों को कम-से-कम वेतन देते थे. वे मजदूरों को बिना आराम किए दिन भर उनसे कठिन मेहनत करवाते थे. फार्म मालिक अपने मजदूरों को रहने के लिए साफ़ सुथरी जगह भी नहीं देते थे.

सीज़र ने इन सबको बदलने की ठानी. जब NFWA की ताकत बढ़ी तब फार्म मजदूरों ने भी अन्य मजदूरों को मिलने वाली सुविधाओं की मांग की.

पर 1965 में, कुछ अंगूर तोड़ने वाले मजदूर जो NFWA के मेम्बर नहीं थे, अधीर होने लगे. वो फसल में मौसम में कुछ अतिरिक्त कमाई करना चाहते थे. क्योंकि उन्हें पता था कि सर्दियों में उन्हें कुछ भी काम नहीं मिलेगा.

अंगूरों के कई बागों में मजदूरों ने 1.4-डॉलर प्रति घंटे मजदूरी की मांग की. साथ में हरेक अंगूर के डिब्बे के पीछे 25-सेंट भी मांगे.

मजदूरों ने धमकी दी :

“हम काम करना बंद कर देंगे! हम हड़ताल पर जायेंगे! तुम्हारे अंगूर बेलों पर लटके सड़ेंगे!”

पर अंगूर के बागों के मालिकों ने वेतन नहीं बढ़ाया. फिर मजदूर अंगूर के खेतों के किनारे इकट्ठे हुए. वे चिल्लाए “हड़ताल!” वे स्पेनिश में चिल्लाए “हेलगा” उसका मतलब भी हड़ताल ही होता था.

वे चाहते थे कि अन्य मजदूर भी खेत छोड़कर उनके साथ आकर जुड़ें.





तब तक सीज़र की, किसी बड़ी हड़ताल करने की तैयारी नहीं थी. सीज़र के पास उस समय सिर्फ 87-डॉलर ही बचे थे. उसे डर था कि हड़ताल के दौरान बहुत से मजदूरों को भोजन के लिए पैसों की ज़रूरत होगी. पर संगठन के लोगों ने सीज़र से हड़ताल में शामिल होने पर दबाव डाला. अंत में सीज़र ने उनकी बात मानी. उसके बाद NFWA के मेम्बर भी खेतों के पास खड़े होकर "हेलगा! हेलगा!" चिल्लाने लगे.

कई हफ़्तों तक मालिकों और मजदूरों के बीच बहस और लड़ाई हुई. फिर अंत में एक समझौता हुआ और दो अंगूर के बागों के मालिकों ने वेतन बढ़ाने की मांग को स्वीकार किया. उसके बाद ही आन्दोलनकारी मजदूर काम पर वापिस गए.



फिर अंगूर के सबसे बड़े में बाग में हड़ताल हुई. इस बार मजदूरों ने कहा कि सीज़र शावेज़ को उनके प्रतिनिधि के रूप में बोलने दिया जाए. मालिक उसके लिए राज़ी नहीं हुआ. उसकी बजाए वो मेक्सिको जाकर एक ट्रक भरकर नए मजदूर ले आया.

मेक्सिकन मजदूरों को इस हड़ताल के बारे में पता नहीं था. वो अंग्रेजी बिल्कुल भी नहीं समझते थे. जब उन्होंने “हेलगा” शब्द सुना तो उन्हें स्थिति समझ में आई. उसके बाद हड़ताल बहुत दिनों तक जारी रही.

बहुत से लोगों ने जब हड़ताल की कहानी सुनी तो उनका सीज़र पर यकीन बढ़ा. पादरी, मिनिस्टर, छात्र और अन्य लोग सीज़र की मदद करने डेलानो पहुंचे. उन्होंने लोगों के पत्रों का उत्तर दिया और मजदूरों की दुकानों को चलाया. वे हड़ताल कर रहे मजदूरों के लिए खाना लेकर गए. कई अन्य लोगों ने खाना, कपड़े और पैसे भी भेजे.

सीज़र ने उन सभी का आभार व्यक्त किया. पर फिर भी हड़ताल जारी रही. हर रोज़ डेलानो में स्थिति और ख़राब होती गयी. हड़ताल कैसे ख़त्म की जाए? सीज़र को कुछ समझ में नहीं आया.

एक दिन सीज़र के दिमाग में एक नया विचार आया. अगर फार्म मजदूरों की हड़ताल का देश में इतने लोग समर्थन करते थे तो शायद वे अलग-अलग तरीकों से उनकी मदद भी कर सकते थे. देशवासी, अंगूर न खरीदने का, यानि अंगूरों का बहिष्कार करने का निर्णय ले सकते थे. तब शायद अंगूर के बाग के मालिक, मजदूरों के साथ कोई समझौता करने के लिए विवेश होते.

सीज़र ने आन्दोलनकारी मजदूरों की एक मीटिंग बुलाई. वहां उसने उनसे अपने इस नए विचार के बारे में चर्चा की. मजदूरों को सीज़र की योजना बहुत पसंद आई.

फिर जनवरी 1968 को, पचास मजदूर एक पुरानी स्कूल बस में बैठकर न्यू-यॉर्क गए. अन्य मजदूर इसी तरह दूसरे शहरों में गए. उन्होंने वहां पर स्टोर-मालिकों से, दुकानदारों से अंगूर नहीं बेंचने की अपील की. उन्होंने लोगों से अंगूर नहीं खरीदने की भी विनती की.

जहाँ कहीं भी मजदूर गए वहां पर लोगों ने स्वेच्छा से स्टोर्स के सामने “अंगूर मत खरीदो” के बैनर लगाये. ट्रक ड्राइवर भी इस आन्दोलन में मदद करना चाहते थे. कई ट्रक वालों ने अंगूरों को, बागों से शहर तक ढोने से इंकार किया. बंदरगाह के मजदूरों ने एक्सपोर्ट के लिए अंगूरों को पानी के जहाजों पर लादने से इंकार किया.

## अंगूर मत खरीदो



## अंगूरों का बहिष्कार करो

अगले साल यह बहिष्कार देश के अन्य हिस्सों में भी फैला. इससे सीज़र बहुत खुश हुआ. उसे लगा कि अपनी इस योजना से वो फार्म मजदूरों की समस्याओं को अपने सभी देशवासियों के सामने रख पाया था.

सीज़र अब अधेड़ उम्र का हो चुका था. उसकी काली चमड़ी पर अभी भी झुर्रिये नहीं थीं और उसके बाल अभी भी काले थे. पर अब वो थक चुका था और बहुत दुबला हो गया था. इतने साल झुककर काम करने से अब उसकी पीठ में काफी दर्द रहता था.

सीज़र के दोस्तों का एक ग्रुप अब उसकी देखभाल करता था. जब सीज़र किसी मीटिंग में जाता था तो उसके मित्र उसे सीढ़ियाँ चढ़ने और उतरने में मदद करते थे. वे सब उसकी सुरक्षा करते और अपने दिल से उसकी मदद करना चाहते थे.

संघर्ष की एक कठिन ज़िन्दगी बिताने के बावजूद सीज़र में कोई ख़ास बदला नहीं आई थी. वो अभी भी अंगूर तोड़ रहे मजदूरों से उनके हालचाल पूछता और अखबार के संवाददाता से बहिष्कार की खबर पूछता था. वो अभी भी अपने परिवार के साथ एक छोटे से घर में रहता था - बिल्कुल अन्य मजदूरों जैसे ही.

फार्म मजदूरों की ज़िन्दगी में जो बदल आई उसे देखकर सीज़र खुश होता था. अब मजदूरों को बेहतर वेतन और रहने को अच्छे घर मिलते थे. अब दोपहर में मजदूरों को आराम करने का समय मिलता था. जब मजदूर बीमार होते तो भी उन्हें पूरी तनख्वाह भी मिलती थी. अब मजदूरों के बच्चों को स्कूल की सुविधा मिलती थी.

पर अब सीज़र भविष्य के लिए जीता था. उसे पूरी उम्मीद थी कि एक दिन अमेरिका की कांग्रेस फार्म मजदूरों को, देश के अन्य मजदूरों जैसे ही समझेगी. उसे विश्वास था कि एक दिन फार्म मजदूरों के यूनियन लीडर, फार्म मालिकों के साथ मिलकर मजदूरों की समस्याओं का समाधान ढूँढेंगे. यह अधिकार अभी उन्हें नहीं था. सीज़र शावेज़ के अनुसार जब वो दिन आएगा तब फार्म के मजदूर “भुलाए हुए अमेरिकंस” नहीं रहेंगे.

1993 में 66 वर्ष की आयु में सीज़र शावेज़ का देहांत हुआ.



